हुज्जतुल इस्लाम
जवाद मोहद्दिसी

9

आइए!

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

(एकता)

हुज्जतुल इस्लाम
जवाद मोहद्दिसी

ट्रांस्लेशन
अब्बास असग़र शबरेज़

किताब : एकता

राइटर : हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी

ट्रांस्लेटर : अब्बास असग़र शबरेज़

पहला प्रिन्ट : अगस्त 2018

तादाद : 2000

पब्लिशर : ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ

प्रेस : न्यु लाइन प्रॉसेस, दिल्ली

क़ीमत : 20 रुपए

+91- 9956 62 0017
8127 79 3428

अल्लाह की रस्सी

को मज़बूती से पकड़े रहो

और आपस में तफ़रक़ा मत पैदा करो।

(सूरए आले इमरान/103)

Contents

अपनी बात

आज की दुनिया भीड़–भाड़, हुल्लड़–हंगामे और चकाचौंध की दुनिया है जिसमें इन्सान और इन्सानियत के ख़िलाफ़ हर वक़्त शैतानी चालें और साज़िशें खेली जा रही हैं जिसकी वजह से हम जैसे इन्सान तरह–तरह की दिमाग़ी व रूहानी बीमारियों और मुश्किलों के एक ऐसे दलदल में फंसे हुए हैं जिस से निकलने का रास्ता भी नज़र नहीं आता। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि जिन दुनियावी बातों की वजह से हम इन मुश्किलों में फंसे हुए हैं, उन मुश्किलों से निकलने के लिए भी हम उन्हीं लोगों की तरफ़ देखते हैं जिन्होंने हमारे चारों तरफ़ इन मुश्किलों का जाल बुना है। नतीजा यह होता है कि हम मुश्किलों में और फंसते जाते हैं। जबकि ज़िन्दगी की मुश्किलों से बाहर निकलने और एक सही ज़िन्दगी बिताने के लिए अल्लाह ने अपनी किताब क़ुरआन और मासूम इमामों की शक्ल में इल्म के ख़ज़ाने हमारे पास भेजे हैं। इमामों व अहलेबैत[अ०] की ज़िंदगी और उनका बताया रास्ता हमारे लिए सबसे अच्छा रास्ता था और उनमें भी हज़रत अली[अ०] ने जो कुछ कहा या लिखा उस को समेट कर लिखी गई किताब नहजुल बलाग़ा सबसे अलग है जो हर ज़माने में हमें सही रास्ता दिखाने के लिए सूरज का काम कर रही है। नहजुल बलाग़ा एक ऐसी किताब है जिसमें हज़रत अली[अ०] ने ज़िन्दगी के हर मसले के बारे में बात की है और उस मुश्किल से निकलने के लिए हमें रास्ता दिखाया है।जो किताब आपके हाथों में है इसमें कोशिश की गई है कि दुनिया भर में मशहूर किताब 'नहजुल बलाग़ा' में लिखी बातों

को बिलकुल आसान ज़बान में अपने उन नौजवानों के सामने पेश किया जाए जो हज़रत अली[अ०] की बातों को पढ़ना और समझना चाहते हैं ताकि हम अपने पालने वाले से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें।

यह किताब आईए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं- (९) ईरान के एक मशहूर स्कॉलर हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी ने लिखी है जो **एकता** के बारे में है। यह उसका हिन्दी ट्रांस्लेशन है।

इस सीरीज़ की

पहली कड़ी **तौबा**

दूसरी **दुआ**

तीसरी **शैतान**

चौथी **टाइम**

पाँचवी **इमाम अली[अ0] की वसिय्यत**

छटी **दोस्ती**

सातवीं **अल्लाह की बन्दगी**

आठवीं **ज़बान**

थी और यह सारी किताबें ताहा फ़ाउंडेशन छाप चुका है। अब यह नवीं किताब **एकता** के बारे में है जो आपके हाथों में है।

किताब छपती है तो उसमें कहीं न कहीं कमिया/ग़लतियाँ रह ही जाती हैं। यह किताब आपके हाथों में है। इसे पढ़ने के बाद जो कमियाँ आपको दिखाई दें वह हमें ज़रूर बताईए ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया जा सके।

ताहा फ़ाउंडेशन

लखनऊ

पहली बात

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हमारे जिस्म तो हमारे आसपास होते हैं लेकिन दिल एक-दूसरे से बहुत दूर दिखाई पड़ते हैं। इसके उलट कभी ऐसा भी होता है कि दो लोगों या दो ग्रुपों या दो क़ौमों में यूँ तो मीलों की दूरी होती है लेकिन उनके दिल एक साथ और एक-दूसरे की यादों से भरे हुए होते हैं यानी दूर होने के बावजूद भी आपस में मेल-जोल, एकता और मोहब्बत का एहसास करते हैं।

सच्चाई भी यही है कि अगर हमारे बदन एक-दूसरे के साथ हों लेकिन दिलों में एक दूसरे से दुश्मनी व जलन की वजह से दूरियाँ पाई जाएं तो भला इसका क्या फ़ायदा है?

जो चीज़ लोगों के रंग-रूप, नस्ल, बोली, सूरत-शक्ल, क़ौम-जाति, शहर-मुल्क और काम-काज के अलग-अलग होने के बावजूद भी एक-दूसरे में प्यार-मोहब्बत का पैग़ाम देती है वह उनकी सोच और ईमान का एक होना है।

जिस चीज़ ने मुसलमानों को अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] के आसपास इकट्ठा कर लिया था वह इस्लामी आइडियॉलोजी थी जबकि उनमें एक ग़ुलाम था तो

दूसरा आज़ाद, एक काला था तो दूसरा सफ़ेद, एक हबशी था तो दूसरा क़ुरैशी, एक ग़रीब था तो दूसरा मालदार, एक मुहाजिर था तो दूसरा अंसार और एक अरब था तो दूसरा नॉन-अरब। इन सारी चीज़ों के बाद भी जो फ़ैक्टर उन लोगों को एक-दूसरे से जोड़े हुए था वह ''इस्लामी भाईचारा'' था जो उन्होंने क़ुरआन से सीखा था।

इतिहास को पढ़ने, तजुर्बों को देखने और क़ुरआन व हदीस से जो बात हमारे सामने आती है वह यह है कि एकता और आपसी मेल-जोल जहाँ भी, जिस ज़माने में भी और जिस क़ौम में भी पाया जाएगा, वह क़ौम हमेशा कामयाब रहेगी। इसके उलट जहाँ भी, जिस ज़माने में भी और जिस क़ौम में भी आपसी दूरियाँ और झगड़े पाए जाएंगे वही क़ौम बर्बादी के दहाने पर पहुँच जाएगी। यह एक ऐसा क़ानून है जो किसी ख़ास जगह, किसी ख़ास पीरियड और या किसी ख़ास क़ौम के लिए नहीं है बल्कि सब के लिए है।

यह बात भी बिल्कुल साफ़ है कि हमारे दुश्मन ने हमारे बीच आपसी फूट के बीज बोकर हमें इस बीमारी में फंसा दिया है और जिससे हम पूरी तरह से कमज़ोर हो गए हैं। हमारे दुश्मनों ने ''फूट डालो और हुकूमत करो'' को अपनी पॉलिसी बना लिया है। जब कभी भी इन्होंने फूट डालने की कोशिश की और हमारे बीच मतभेद उभारे तब-तब इन्हें कामयाबी मिली है और जब कभी भी हम ने होशियारी से काम लिया है और दुश्मनों की चालों को समझते हुए अपने आपसी भाईचारे और एकता

को बचा लिया है तब-तब दुश्मन को मुँह की खाना पड़ी है।

इतिहास में ऐसे बहुत सारे नमूने भरे पड़े हैं जो आपसी फूट के बुरे नतीजे भी दिखाते हैं और एकता के नतीजे में इज़्ज़त, ताक़त और कामयाबी भी। पिछले नबियों और पिछली क़ौमों से लेकर अब तक हर जगह यही क़ानून चला आ रहा है और जब तक यह दुनिया चलेगी ऐसा ही रहेगा।

क़ुरआन की आयतें, अल्लाह के रसूल[स०] और इमामों[अ०] की हदीसें, हमारी अक़्ल और हमारा नेचर, साथ ही इतिहास के अभी तक के तजुर्बे; सब के सब इसी आपसी एकता और इस्लाम के इस बुनियादी क़ानून का पता देते हैं। इस आपसी भाईचारे और एकता को बचाना हम सबकी ड्युटी है। उधर आपसी फूट का तबला बजाना और आपसी दुश्मनी की आग को भड़काना एक ऐसा गुनाह है जिसे कभी माफ़ नहीं किया जा सकता।

जो कुछ इस किताब में लिखा गया है वह इस सब्जेक्ट पर नहजुल बलाग़ा में मौजूद हज़रत अली[अ०] की ज़बान से निकलने वाली नसीहतें हैं।

हमें उम्मीद है कि हज़रत अली[अ०] की मोहब्बत का दम भरने वाले इन नसीहतों से ज़रूर फ़ाएदा उठाएंगे और आपसी फूट को भुलाकर एकता के रास्ते पर चलते हुए कामयाबी की बुलंदियों को छुएंगे।

जवाद मोहद्दिसी
क़ुम, ईरान

एकताः बहुत बड़ी नेमत

जिस तरह अल्लाह ने लड़ाई–झगड़े और आपसी टूट–फूट को अपना मनपसंद काम बना लेने वालों को बुरा कहा है उसी तरह आपस में मिल–जुलकर रहने वाले लोगों पर भी अल्लाह ने अपनी नेमतों की बरसात की है।

इन नेमतों के बारे में अल्लाह ने क़ुरआन करीम में फ़रमाया है कि जब लोग आपसी झगड़ों में फंस गए तो हम ने उनके अंदर मोहब्बत पैदा की, अनके बीच अपने आख़िरी नबी को भेजा और इस्लाम के झंडे तले उनमें आपसी एकता बनाई। इस बारे में क़ुरआन करीम की कुछ आयतें बहुत खुलकर इस मतलब को समझा रही हैं जैसे सूरए आले इमरान/103, सूरए अनफ़ाल/163 और सूरए हुजरात/10 वग़ैरा वाली आयतें।

हज़रत अली[अ०] ने भी इस नेमत के बारे में बार–बार हमें समझाया है। यहाँ तक कि आपने अल्लाह के रसूल[स०] के बारे में कहा है कि वह मुस्लिम एकता का सबसे बड़ा सोर्स थे। हज़रत अली[अ०] की इन नसीहतों में से कुछ पर हम यहाँ बात करेंगेः

> अल्लाह ने मुसलमानों पर इस अनमोल नेमत के रास्ते बहुत बड़ा करम किया है जिसकी क़ीमत को लोगों में से कोई भी नहीं पहचानता क्योंकि इस नेमत की जो क़ीमत भी लगाई जाए, कम है और यह नेमत हर नेमत से बड़ी नेमत है। यह वह नेमत है जिसके रास्ते उनके बीच आपसी मोहब्बत और एकता का रिश्ता बनाया गया है जिसके तले वह जी रहे हैं और जिसके किनारे आराम से रह रहे हैं।''[1]

इसी तरह अल्लाह के रसूल[स०] को मोहब्बत और आपसी मेल-जोल का पैग़म्बर बनाकर भेजा जबकि उस जाहिलियत के पीरियड में लोगों के बीच एक-दूसरे से भयानक दुश्मनी और छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई-झगड़ा बिल्कुल आम बात थी।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> अल्लाह ने उनकी वजह से फ़ितनों को दबा दिया था और दुश्मनियों की आग के अंगारे बुझा दिए थे। भाई-भाई में मोहब्बत भर दी थी और जो लोग (कुफ़्र में) एक हो गए थे उन्हें अलग-अलग कर दिया था।''[2]

अल्लाह की यह नेमत पिछले वाले लोगों को भी दी गई थी जिसका एक नमूना बनी इस्राईल हैं जिन्हें अल्लाह ने आपसी एकता की नेमत अपने दीन के ज़रिये दी थी। यह और बात है कि उन्होंने इस अनमोल नेमत को ठुकरा दिया।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/94

हज़रत अली[अ०] बनी इस्राईल को दी गई इस नेमत के बारे में फ़रमाते हैंः

देखो! अल्लाह ने उन पर कितने एहसान किये हैं कि उनके बीच अपना रसूल भेजा जिसने उन्हें अल्लाह का हुक्म मानने का पाबन्द बनाया और उन्हें आपसी एकता पर इकट्ठा कर दिया। फिर ख़ुशहाली ने उनके ऊपर साया कर दिया था और अल्लाह ने उनके लिए अपने करम की नहरें बहा दी थीं। इस्लामी क़ानूनों ने उन्हें अपनी बरकत के अनमोल फ़ायदों में लपेट लिया था। जिसके बाद वह उसकी नेमतों में डूबे और ज़िन्दगी की हरियाली में मगन रहे। फिर (इस्लाम के झंडे तले उनकी ज़िन्दगी) के हर मैदान के सारे मामले ठीक-ठाक हो गए और अपने हालात (के अच्छा होने) की वजह से वह दूसरों पर छा गए और एक मज़बूत हुकूमत की ऊँची-ऊँची चोटियों पर (दीन व दुनिया की) कामयाबियाँ उन पर झुक पड़ीं।

फिर उन्होंने सारी दुनिया पर हुकूमत की और दूर-दूर तक फैली इस ज़मीन तख़्त व ताज के मालिक बन गये। जिन पाबन्दियों की वजह से यह दूसरों के ग़ुलाम थे, अब यह उन्हें पाबन्द बनाकर उन्हें अपने कंट्रोल

> में कर रहे थे और जिनका हुक्म मानने पर मजबूर थे अब उन्हीं को हुक्म दे रहे थे।''[1]

नेमतों की क़ीमत पहचानने वाले लोग इस अनमोल नेमत की क़ीमत बेशक पहचानते हैं और वह इस नेमत को बचाने के लिए अपनी हर क़ीमती से क़ीमती चीज़ की बाज़ी भी लगा देते हैं। ऐसे लोग इस एकता के लिए हर तरह की दुश्मनी और आपसी झगड़ों से किनारा कर लेते हैं। वही अली[अ०] जिनके इंसाफ़ के चर्चे दोस्त-दुश्मन हर एक की ज़बान पर रहते हैं और वही वह अली[अ०] जो दीन के दुश्मनों को एक पल के लिए भी नहीं देखना चाहते, वही अली[अ०] अपने ज़माने में इन्हीं सारी बातों की वजह से इस्लाम को बचाने के लिए उनकी हुकूमत में होने वाली तीन भयानक जंगों के बारे में फ़रमाते हैंः

> जो लोग इस्लाम की वजह से हमारे भाई कहलाते हैं अब हमें उन्हीं से जंग करना पड़ गई है क्योंकि (इन लोगों की वजह से) समाज में गुमराही, टेढ़ापन, शक और ग़लत-सलत बातें उभर आई हैं। जब हमें कोई ऐसा रास्ता दिखाई दे जिस से अल्लाह हमारी मुसीबतों को दूर कर दे और इसकी वजह से हमारे बीच जो (लगाव) बाक़ी रह गया है उसकी तरफ़ बढ़ते हुए एक-दूसरे के पास हों तो हम ऐसा ही चाहेंगे और हर

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/192

> उस काम से हाथ रोक लेंगे जो इससे टकराता हो।’’[1]

यह तीनों जंगें यूँ तो अपने आप में ख़ुद एक तरह से मार-काट का खुला नमूना हैं लेकिन मुसलमानों को उभारने और दुश्मनों का सफ़ाया करने के लिए बहुत ज़रूरी थीं ताकि फिर कभी चालाक दुश्मन लोगों को इस्लामी हुकूमत के ख़िलाफ़ न भड़का सके।

ग़ुलाम रज़ा क़ुदसी ख़ुरासानी ने कितनी अच्छी बात कही हैः

> इस समाज के सारे तार एक ज़ंजीर की कड़ियों की तरह आपस में मिले हुए हैं और इस ज़ंजीर से बस एक ही आवाज़ आती है और वह है ‘‘एकता’’ की आवाज़। दुनिया की बनावट भी हमें एकता ही सिखाती है क्योंकि इस दुनिया की बनावट इकाई पर रखी गई है। उम्मत की कश्ती ठीक-ठाक किनारे तक पहुँच जाएगी क्योंकि इसका खेवनहार एकता को बनाया गया।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/120

दिलों के आपस में जुड़ने से एकता जन्म लेती है

एकता बदनों के एक साथ इकट्ठा होने से बाद में उभरती है पहले दिलों के आपस में मिलने और जुड़ने से जन्म लेती है।

दिलों का एक होना अपने अन्दर यह ख़ासियत रखता है कि इससे लोगों के बदन भी एक-दूसरे के पास आ जाते हैं और अगर दिल एक-दूसरे से दूर हों तो फिर लोगों का एक साथ मिलना-जुलना किसी भी बीमारी का इलाज नहीं कर सकता। हज़रत अली[अ०] एकता और आपसी मेल-जोल को पाने के लिए इसी क़ानून की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैंः

> गिनती में तुम्हारे ज़्यादा होने का क्या फ़ायदा क्योंकि तुम्हारे दिल ही एक नहीं हो पाते।[1]

जब दिल एक-दूसरे से रूठे हुए हों तो ज़बान से मोहब्बत जताने का क्या फ़ायदा? अगर दिल

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/117

आपस में मिले हुए न हों तो मोहब्बत दिखाने का क्या मतलब बनता है?

हज़रत अली[अ०] एक ऐसा ही समाज बनाने के लिए फ़रमाते हैंः

> मोहब्बत भरी बातें बस ज़बानों पर आएंगी मगर लोगों के दिल एक-दूसरे से दूर रहेंगे।[1]

किसी भी समाज के सारे लोगों या किसी फ़ौज के सारे सिपाहियों या किसी आर्गेनाइज़ेशन के सारे मेम्बरों के दिलों का आपस में न जुड़ा होना दुश्मनों को उनके बीच दूरियाँ उभारने की छूट देने के साथ-साथ उनके ऊपर अपनी मनचाही प्रोग्रामिंग थोपने का चांस भी दे देता है। हज़रत अली[अ०] एक जंग में अपने दुश्मन के आमने-सामने थे और इस जंग में आपको कुछ ऐसे साथियों की ज़रूरत थी जिनके दिल आपस में जुड़े हों ताकि फ़ौज की ताक़त कई गुना बढ़ जाए मगर जब ऐसा नहीं हो सका तो इमाम ने इस बात पर अपना दुख कुछ यूँ जताया थाः

ऐ वह लोगो! तुम्हारे बदन तो एक साथ हैं मगर तुम्हारी ख़्वाहिशें[2] अलग-अलग हैं। तुम्हारी बातें तो ऐसी हैं कि सख़्त पत्थरों को भी मुलायम बना देती हैं मगर तुम्हारे काम ऐसे हैं जो दुश्मनों को तुम्हारे ऊपर दनादन हमला करने की छूट दे देते हैं। यूँ तो तुम कहते फिरते हो कि यह कर

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/106

[2] इच्छाएं

देंगे और वह कर देंगे और जब जंग छिड़ जाती है तो तुम मैदान से भागने लगते हो।[1]

इमाम अली[अ०] यह बात अच्छी तरह से जानते थे और दूसरों को भी इस बात का ध्यान दिला रहे थे कि चाहे जितने भी लोग मिलकर किसी को अपना लीडर बना लें और चाहे जितनी उसकी बैअत कर लें मगर जब तक दिलों के अंदर एक-दूसरे के लिए मोहब्बत नहीं होगी तब तक मनचाहा नतीजा नहीं मिलने वाला।

तीसरे ख़लीफ़ा के बाद जब लोग एक अद्भुत जोश के साथ हज़रत अली[अ०] को हुकूमत सोंपने के लिए आए तो इमाम[अ०] ने उनसे फ़रमायाः

> मुझे छोड़ दो और (हुकूमत के लिए) किसी और को ढूँढ लो। हमारे सामने एक ऐसा मामला है जिसके कई चेहरे और कई रंग हैं जिसका बोझ न दिल उठा सकते हैं और न अक़्लें उसे मान सकती हैं। देखो! आसमान पर घटाएं छाई हुई हैं और रास्ता पहचानने में नहीं आता।[2]

जैसे हज़रत अली[अ०] ख़ुद अपनी आँखों से आगे आने वाले उन हालात और होने वाले झगड़ों को देख रहे थे कि जहाँ हर एक बस अपनी भलाई की बात कर रहा था और हालात का धारा अपनी ओर मोड़ना चाह रहा था।

हज़रत अली[अ०] अपनी पिछली बात को आगे बढ़ाते हुए फ़रमाते हैंः

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/29
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/90

तुम्हें पता होना चाहिए कि अगर मैं तुम्हारी इस बात को मान लूँ तो तुम्हें उस रास्ते पर ले चलूँगा जिसे मैं अच्छी तरह से पहचानता हूँ और इसके बारे में किसी भी आदमी की किसी बात और कुछ भी कहने-सुनने पर कान नहीं धरूँगा। अगर तुम मेरा पीछा छोड़ दो तो फिर जैसे तुम हो वैसा ही मैं हूँ और हो सकता है कि जिसे तुम अपना सरदार बनाओ उसकी बात मैं तुम से ज़्यादा सुनूँ और मानूँ। यह बात अच्छी तरह से समझ लो कि (तुम्हारी दुनियावी भलाई के लिए) तुम्हारा सरदार होने से मेरा वज़ीर होना ज़्यादा अच्छा है।[1]

हज़रत अली[अ०] को यह पता था कि इन लोगों पर हुकूमत करना आसान काम नहीं है और अगर लोगों में आपसी झगड़े होने लगे तो बड़े से बड़ा हुकूमत करने वाला भी अपनी हुकूमत नहीं चला सकता। यह तो पक्की बात है कि दिलों को अपनी ओर मोड़ना करना अपने आप में ख़ुद एक बड़ा हुनर है और यह हुनर बस कुछ ही लोगों में पाया जाता है। बहरहाल दिलों को एक-दूसरे से मिलाना और उनमें मेल-मोहब्बत उभारना एक बड़ा ही ज़रूरी काम है।

इस बारे में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं: लोगों के दिल जंगली जानवरों की तरह होते हैं जो भी इन्हें सधा लेता है यह उसी की तरफ़ झुक जाते हैं।[2]

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/90
[2] नहजुल बलाग़ा, हिकमत/50

आपसी झगड़ों से बचिए

इस दुनिया में कोई भी समझदार आदमी आपसी झगड़ों और समाजी टूट-फूट से होने वाले नुक़सानों को नहीं नकार सकता है लेकिन फिर भी कुछ वजहों से आदमी इसका शिकार हो ही जाता है। समाज के हमदर्द लोगों ने हमेशा दूसरों को आपसी झगड़ों और इख़्तेलाफ़ से बचने की नसीहत की है क्योंकि वह इसके बुरे असर को अच्छी तरह से जानते और समझते रहे हैं। लिखने वालों और बोलने वालों सभी ने इस बुराई से दूर रहने पर ज़ोर दिया है। हज़रत अली[अ०] ने इस बारे में यह फ़रमाया हैः

> इसी बड़े ग्रुप के साथ लग जाओ क्योंकि अल्लाह का हाथ एकता बनाए रखने वालों के ऊपर रहता है। आपसी झगड़ों और टूट-फूट से दूर रहो क्योंकि किसी ग्रुप से अलग हो जाने वाला शैतान की तरफ़ चला जाता है, बिल्कुल उसी तरह जैसे गल्ले से

> कट जाने वाली भेड़ भेड़िये को मिल जाती है।[1]

बेशक! दूसरों से कट-कटाकर जीने की कड़वाहट बस वही महसूस कर सकता है जिसने एकता की मिठास चख रखी हो और जिसने एकता की बरकतों को देख लिया हो। मुसलमान जब तक एक-दूसरे के साथ और मिल-जुलकर रहे तब तक उन्हें हर जगह इज़्ज़त व कामयाबी मिलती रही मगर जब कभी भी उनमें एकता की कमी दिखाई दी तब-तब उन्होंने ख़ुद अपनी आँखों से अपनी इज़्ज़त अपने ही हाथों बर्बाद होते देखी है।

वह उम्मत जो अपने उस लीडर व इमाम के बताए रास्ते पर न चले जो ख़ुद ''एकता का सेंटर'' हो, उसे आपसी झगड़ों और दूरियों के जाल में फंसना ही है। इसी तरह दूसरों का उन पर छा जाना भी तय है। इस बात को बार-बार हज़रत अली[अ०] की ज़बानी सुना गया है।

एक जगह हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया थाः

> जब लोग अपने लीडर से आगे चलने लगें या उस पर ज़ुल्म ढाने लगें तो फिर हर बात पर आपस में झगड़ा होगा और एक-दूसरे के ऊपर ज़ुल्म के निशान उभर आएंगे। दीन में बुराईयाँ बढ़ जाएंगी, शरीअत के बताए रास्ते छोड़ दिए जाएंगे, अपने दिल की ख़्वाहिशों को पूरा किया जाएगा, शरीअत के अहकाम ठुकरा दिये जाएंगे, रूहानी बीमारियाँ बढ़ जाएंगी और

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/125

> बड़े से बड़े हक़[1] को ठुकरा देने और बड़ी से बड़ी ग़लत चीज़ को अपना लेने से भी कोई नहीं घबराएगा। जब ऐसा होगा तो अच्छे लोग बदनाम और बुरे लोग इज़्ज़तदार हो जाते हैं जिसके बाद बन्दों पर अल्लाह का अज़ाब बढ़ जाता है। इसलिए इस हक़ को पूरा करने में एक-दूसरे को समझाना-बुझाना और एक दूसरे की अच्छी तरह से मदद करना तुम्हारे लिए बहुत ज़रूरी है।[2]

हज़रत अली[अ०] की हुकूमत में जिस मुसीबत ने जंगे जमल के नाम से जन्म लिया वह असल में दुनिया की चाहत, जलन और अपने लीडर की बात न मानने का रिज़ल्ट था। इमाम अली[अ०] इस दुनिया के पुजारी ग्रुप के बारे में फ़रमाते हैं:

> जहाँ तक मेरी हुकूमत से नाराज़ी की बात है तो इस मामले में यह लोग एकजुट हो चुके हैं और जब तक तुम्हारे एक-दूसरे से अलग होने का डर नहीं होगा तब तक मैं भी सब्र किये रहूँगा। अगर वह अपनी राय की कमज़ोरी के बाद भी इसमें कामयाब हो गये तो मुसलमानों की आपसी एकता का तार टूट जायेगा। यह लोग उस आदमी से जल रहे हैं जिसे ख़ुद अल्लाह ने हुकूमत व ख़िलाफ़त दी है और जलन की इस आग में जलते हुए दुनिया के पुजारी बन गए हैं।

---

[1] अधिकार

[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/214

> यह लोग चाहते हैं कि सारे मामलों (दीन) को पलटा कर पुराने वाले ज़माने की तरफ़ ले जाएं।[1]

इमाम अली[अ०] की इस हदीस से यह बात साफ़ हो जाती है कि इमाम[अ०] इस तरह की हर उस बुराई और बुराई करने वाले को बुरा समझते हैं जो आम लोगों की सोच से खेलना शुरू कर देता है और कुछ लोगों को अपने आसपास इकट्ठा करके उन्हें छोटे-छोटे ग्रुपों में बांट देता है।

इमाम अली[अ०] इस समाजी मुसीबत का हाल कुछ यूँ सुनाते हैं:

> यह लोग आपसी मोहब्बत व एकता के बाद अपनी असली जगह से बिखरकर अलग-अलग हो गये होंगे। वैसे इनमें से कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो एक टहनी को पकड़े रहेंगे कि जिधर यह झुके उधर वह भी झुक जाएंगे।[2]

हज़रत अली[अ०] अपने मानने वालों से कहते हैं कि इस्माईल[अ०] व इस्हाक़[अ०] के बेटों और बनी इस्राईल के पिछले हालात से सीख लो क्योंकि क़ौमों के हालात एक-दूसरे से बहुत ज़्यादा मिलते-जुलते होते हैं और इतिहास अपने आप को दोहराता रहता है।

इस बारे में इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया है:

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/167
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/164

इस्माईल[अ०], इस्हाक़[अ०] और याक़ूब[अ०] के बेटों के हालात से कुछ सीखने की कोशिश करो। हालात कितने मिलते हुए हैं और रहन-सहन कितना एक जैसा है। उन लोगों के एक-दूसरे से अलग हो जाने पर क्या-क्या नहीं हुआ। इन सारी बातों के बारे में सोचो-समझो और विचार करो क्योंकि जब रोम और दूसरी जगहों के बादशाह उन पर हुकूमत कर रहे थे तो वह लोग उन्हें हरी-भरी जगहों, इराक़ के दरियाओं और दुनिया की अच्छी जगहों से पीछे हटाकर कांटेदार झाड़ियों, झक्कड़दार हवाओं वाले रास्तों और रोज़ी-रोटी की दिक़्क़तों से भरी जगहों की तरफ़ ढ़केल देते थे। आख़िर में उन्हें दाने-दाने के लिए हाथ फैलाने वाला, चोटिल पीठ वाले ऊँटों का रखवाला और बालों से बनी झोंपड़ियों में रहने वाला बनाकर छोड़ते थे। उनका घर-बार सारी दुनिया के घरों से बढ़कर ख़राब और उनके ठिकाने सूखे से बर्बाद होते थे। न उनकी कोई आवाज़ थी जिसे कोई सुनने वाला हो और न उनके पास मेल-मोहब्बत की छाँव थी जिस पर भरोसा करें। उनके हालात बड़े बुरे, हाथ अलग-अलग, आबादी बंटी हुई, मुसीबतें घेरे हुए और जिहालत उन्हें जकड़े हुए थी। हालात यह थे कि लड़कियाँ ज़िन्दा-ज़िन्दा मिट्टी में दफ़ना दी जाती थीं, घर-घर मूर्ति पूजा

> होती थी, रिश्ते-नाते तोड़े जा चुके थे और लूट-खसोट आम थी।[1]

आपसी एकता और मेल-मोहब्बत के मिट जाने की वजहों में से एक वजह एक-दूसरे से जलन होना भी होती है। जलन एक बहुत बुरी बीमारी है जबकि अच्छे इन्सानों में यह बुराई दूर-दूर तक नहीं पाई जाती।

हज़रत अली[अ०] जलन का नुक़सान यह बताते हैं:

> एक-दूसरे से जलना बंद कर दो क्योंकि यह (अच्छाईयों को) छील डालती है।[2]

इसलिए लोगों को मिल-जुलकर रहने पर पूरा ध्यान देना चाहिए ताकि अपनी मोहब्बतों का अपने ही हाथों ख़ून होता हुआ न देखें। एकता का एक सब से बड़ा फ़ाएदा वह है जो हमें दुश्मनों के साथ होने वाली जंगों में मुसलमानों की कामयाबी के तौर पर दिखाई पड़ता है।

इमाम अली[अ०] दुश्मन की तरफ़ भेजे जाने वाली एक फ़ौज से फ़रमाते हैं:

> देखो! तितर-बितर होने से बचे रहना! उतरना तो एक साथ उतरना और आगे बढ़ना तो भी एक साथ ही आगे बढ़ना।[3]

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/84
[3] नहजुल बलाग़ा, लैटर/11

एकता का रास्ता

(1) दीन

जिस चीज़ ने अल्लाह के रसूल[स०] के पीरियड में मुसलमानों को अलग-अलग क़ौमों, रंगों और नस्लों का होने के बाद भी एकता की माला में बांधे रखा था वह दीन था और आज भी यह फ़ैक्टर अपनी जगह वैसे ही बाक़ी है जो क़यामत तक ऐसे ही बाक़ी रहने वाला है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> यूँ तो आज अरब वाले गिनती में बहुत कम हैं मगर इस्लाम की वजह से बहुत ज़्यादा हैं और अपनी समाजी एकता की वजह से हर एक पर छा जाने वाले हैं।[1]

इसी ख़ुतबे के शुरू में इमाम अली[स०] ने फ़रमाया है:

> इस चीज़ में कामयाबी या नाकामी हमारी फ़ौज के छोटा-बड़ा होने पर नहीं टिकी है। यह तो अल्लाह का दीन है जो दूसरे हर दीन पर छा गया है और यह उसी की फ़ौज है जिसे उसने ख़ुद तैयार किया है।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/144

> अल्लाह ने इस फ़ौज की ऐसी मदद की है कि यह बढ़कर इतनी मज़बूत हो गई है और फैल कर दूर-दूर तक पहुँच गई है।[1]

हज़रत अली[अ0] की इस गहरी हदीस में इस्लामी एकता, मुसलमानों की इज़्ज़त, उनकी ताक़त और उनकी कामयाबी के पीछे छुपे असली फ़ैक्टर को बताया गया है।

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ0] दीन और आपसी एकता का गहरा रिश्ता समझाते हुए यूँ फ़रमाते हैंः

> क्या दीन तुम्हें एक जगह इकटठा नहीं करता और ग़ैरत तुम्हें जोश में नहीं लाती ?[2]

इतिहास से यह बात साबित है कि *दीन* जैसा फ़ैक्टर इस्लामी एकता में एक बहुत बड़ा रोल निभाता है। दूसरी चीज़ों से ज़्यादा लोग दीन और दीनी अक़ायद (Beliefs) को अपने लिए कसौटी मानते हुए आपस में एकता का झंडा गाड़ते हैं।

(2) अल्लाह के भेजे हुए दूसरे नबी और आख़िरी रसूल[स0]

अल्लाह के भेजे हुए नबियों ने हमेशा लोगों में मोहब्बत का प्रचार किया है क्योंकि उनका असली

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/144
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/39

काम लोगों को अल्लाह के दीन इस्लाम की तरफ़ बुलाना था।

हज़रत अली[अ०], अल्लाह के आख़िरी रसूल[स०] की रिसालत के बारे में यूँ फ़रमाते हैं कि पहले लोग तरह-तरह के आपसी झगड़ों में घिरे हुए थे, दीन की बुनियाद इन्हीं झगड़ों और चालों के तले दबी हुई थी, असल दीन तो कहीं दिखता ही नहीं था, सब कुछ बिखरा पड़ा था और हर जगह बुराईयाँ फैली हुई थीं। इस हालत में अल्लाह ने अपने आख़िरी रसूल को इस्लाम का झंडा देकर भेजा था :

> मैं यह भी गवाही देता हूँ कि मोहम्मद[स०] उसके बन्दे और रसूल हैं जिन्हें चारों ओर जाने-पहचाने दीन, लिखी हुई किताब, चमकदार नूर, चमकती हुई रौशनी... के साथ भेजा ताकि शकों और दिमाग़ों में उठने वाले सवालों को दूर किया जा सके। खुली निशानियों से सुबूत पहुँचा दिए जाएं, आयतों के ज़रिये डराया जाए और क़यामत के दिन से डराया जाए। उस वक़्त हालत यह थी कि लोग ऐसी चालों में घिरे हुए थे कि दीन के बन्धन टूटे हुए, यक़ीन (भरोसे) की बुनियादें ढुल-मुल, उसूल (क़ानून) बिखरे हुए और हालात ख़राब थे।[1]

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ०] ने अल्लाह के आख़िरी रसूल[स०] के बारे में कहा है कि जब दिलों में आपसी दुश्मनी कूट-कूट कर भरी हुई

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/2

थी तब उन्होंने समाज में प्यार-मोहब्बत के बीज बोए थेः

> अल्लाह ने अपने रसूल स० के हाथों बिखरे हुए लोगों को एक जगह इकट्ठा करके सीनों में भरी हुई भयानक दुश्मनियों और दिलों में भड़क उठने वाले हसद (जलन) के बाद सारे रिश्तेदारों को आपस में मिला दिया था।[1]

ख़ुद अल्लाह के रसूल स० ने भी हमें एकता और मिल-जुलकर रहना ही सिखाया है। आपकी हदीसों में मुसलमानों की आपसी एकता पर बहुत ज़ोर दिखाई पड़ता है।

अल्लाह के रसूल स० की नज़र में लोग एक कंघे के दानों की तरह हैं यानी सब के सब एक जैसे और बराबर। रसूले इस्लाम स० ने समाज में रहने वाले लोगों को बदन के अलग-अलग हिस्सों की तरह बताया है कि अगर किसी एक हिस्से में कोई दर्द या तकलीफ़ हो जाए तो दूसरे सारे हिस्से भी उसी दर्द से बेचैन हो जाते हैं।

इमाम अली अ० एक दूसरी जगह एक आयत के बारे में बात करते हुए (जहाँ अल्लाह लोगों को हुक्म दे रहा है कि जब आपस में किसी बात पर लड़ बैठो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल स० की तरफ़ पलटा दो) क़ुरआन करीम और सुन्नत को एकता और भाईचारे को असल कसौटी बताते हुए फ़रमाते हैंः

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/228

अल्लाह की तरफ़ पलटाने का मतलब यह है कि उसकी किताब की मज़बूत आयतों पर अमल किया जाए और रसूल की तरफ़ पलटाने का मतलब यह है कि उनकी ऐसी हदीसों पर अमल किया जाए जिनमें किसी भी तरह का कोई झगड़ा नहीं है (यानी जिन हदीसों को सब मानते हैं)।[1]

(3) इमाम और रहबर (लीडर)

इमामत और लीडरशिप इस्लामी एकता के एक ऐसे बड़े फ़ैक्टर का नाम है जो समाज में रहने वाले अलग-अलग रहन-सहन के लोगों को एक ही सेंटर पर इकट्ठा करने और एक-दूसरे से जोड़े रखने की ताक़त रखती है। हज़रत अली[अ०] की ज़िन्दगी ख़ासकर पिछले तीन ख़लीफ़ाओं की 25 साल की हुकूमत में सब्र के साथ बीतने वाली मगर दुख भरी आपकी ज़िन्दगी इसी मुस्लिम एकता को बचाए रखने में लग गई थी। इमाम अली[अ०] की अपनी हुकूमत में भी यही कोशिश रही कि जंगों और तलवारों से जितना बचा जा सके उतना बचा जाए। इतिहास को जानने वाला छोटे से छोटा आदमी भी इस बात को अच्छी तरह जानता है कि इमाम[अ०] ने इस काम के लिए कितनी मुसीबतें उठाई थीं।

हज़रत अली[अ०] ने अबू मूसा अशअरी के एक ख़त के जवाब में फ़रमाया था:

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53

> तुम्हें पता होना चाहिए कि मुझ से ज़्यादा कोई भी आदमी मुस्लिम समाज को जोड़े रखने और समाजी एकता को बचाने में नहीं लगा हुआ है।[1]

अगर किसी समाज में कोई लीडर न हो तो उस समाज में रहने वाला हर आदमी अपनी मर्ज़ी के हिसाब से चलने लगता है जिससे सारा समाज टूटने-फूटने लगता है।

हज़रत अली[अ०] इमामत व लीडरशिप के बारे में इशारा करते हुए फ़रमाते हैंः

> इमामत उम्मत के सिस्टम को चलाने के लिए है और इमामत के बताए रास्ते पर चलना इमामत की इज़्ज़त के लिए है।[2]

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ०] लोगों के बीच लीडर का दर्जा यूँ बताते हैंः

> हुकूमत के मामलों में हुकूमत करने वाले की जगह वही होती है जो मोहरों में डोरे की जो मोहरों को समेट कर रखता है। जब डोरा टूट जाए तो सारे मोहरे बिखर जाते हैं और फिर कभी सिमट नहीं पाते।[3]

इसलिए समाजी एकता और मुस्लिम भाईचारे के लिए इमामत व लीडरशिप पर भरोसा करना और उसके पीछे-पीछे चलना बहुत ज़रूरी है।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/78
[2] नहजुल बलाग़ा, हिकमत/252
[3] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/144

(4) कुरआने करीम

कुरआने करीम अल्लाह की भेजी हुई एक ऐसी किताब है जिस पर सारी दुनिया के मुसलमान ईमान रखते हैं। इस किताब के आसमानी किताब होने को मुसलमानों के सारे फ़िरक़े मानते हैं। अगर दुनिया भर के सारे मुसलमान बस इसी किताब के सामने अपना सिर झुका दें तो आपस के सारे झगड़े अपने-आप मिट जाएंगे और मुस्लिम एकता का झंडा अपने आप लहराने लगेगा।

हज़रत अली[अ०] ने *यमन* और *रबीआ* के लोगों के लिए जब अपना सरकारी ख़त लिखकर भेजा था तो उसमें लोगों के अधिकार और उनकी ज़िम्मेदारियाँ भी तय कर दी थीं ताकि झगड़ों और मन-मिटाव के काले बादल बिना बरसे ही कहीं और निकल जाएं और शहर की आपसी एकता जूँ की तूँ बनी रहे।

इस बात की पाबन्दी के लिए हज़रत अली[अ०] कुरआने करीम को असल मानते हुए फ़रमाते हैं:

> यह वह एग्रीमेंट है जिसे यमन वालों ने, चाहे वह शहरी हों या देहाती और रबीआ वालों ने, चाहे वह शहर में बसे हुए हों या गाँवों में, मान लिया है कि वह सब के सब अल्ला की किताब पर डटे रहेंगे, उसी की तरफ़ लोगों को बुलाएंगे, उसी के हिसाब से हुक्म देंगे और जो इस किताब की तरफ़ बुलाएगा बस उसी की आवाज़ पर आगे बढ़ेंगे। न इसके बदले में कोई फ़ायदा चाहेंगे और न इसके बजाए किसी और चीज़ पर

> राज़ी होंगे। जो भी अल्लाह की किताब से हटकर चलेगा और उसे छोड़ देगा उसके मुक़ाबले में एकजुट होकर एक-दूसरे का हाथ बटाएंगे। इन सब लोगों की बस आवाज़ एक होगी।[1]

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं कि क़ुरआन चाहता है कि मुसलमान एकजुट हो जाएं, उनके बीच एकता फैल जाए और उनके दिल आपस में मिल जाएंः

> वह दोनों (अबू मूसा अशअरी और अम्र बिन आस) तो सिर्फ़ इसलिए चुने गए थे कि वह बस उन्हीं चीज़ों को ज़िन्दा करें जिन्हें क़ुरआन ने ज़िन्दा किया है और उन्हीं चीज़ों को बीच से हटाएं जिन्हें क़ुरआन ने बीच से हटा दिया है। किसी चीज़ के ज़िन्दा करने का मतलब यह है कि उस पर मिल-जुलकर एकजुट हो जाएं और उसे बीच से हटा देने का मतलब यह है कि उस से दूरी बना ली जाए।[2]

यहाँ हज़रत अली[अ०] शाम के सिपाहियों के साथ होने वाली जंग और झगड़ों से बचने का रास्ता क़ुरआन में ढूँढ रहे हैं और हमें भी वही रास्ता बता रहे हैं। इमाम अली[अ०] खुल्लम-खुल्ला क़ुरआन के फ़ैसले को अपना सहारा बना रहे हैं। यहाँ तक कि अमीरे शाम मुआविया के साथ चलने

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/74
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/127

वाली एक लम्बी लड़ाई में भी इसी क़ुरआन को अपना असली हथियार मानते हैं।

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ०] हमें यह भी बता रहे हैं कि उस वक़्त क्या होगा जब लोग क़ुरआन से अपना नाता तोड़ लेंगे और क़ुरआन बस घरों के अंदर अलमारियों में रखा हुआ मिला करेगाः

> लोगों ने आपसी टूट-फूट और झगड़ों पर तो एका कर लिया है और जमाअत (ग्रुप) से दूर हो गए हैं जैसे ख़ुद वही क़ुरआन को रास्ता दिखा रहे हैं, क़ुरआन उन्हें रास्ता नहीं दिखा रहा है। अब लोगों के बीच बस क़ुरआन का नाम रह गया है और वह बस उसके अंदर लिखे हुए शब्दों को ही पहचान सकते हैं।[1]

हज़रत अली[अ०] की यह सारी बातें साफ़-साफ़ उन लोगों की बुराई में हैं जिन्होंने क़ुरआन को भुला दिया है और बस अपनी ज़बान से क़ुरआन के चाहने वाले बने बैठे हैं। इसीलिए यह लोग कभी भी अल्लाह की किताब क़ुरआन के बताए रास्ते पर चलकर आपसी एकता नहीं बना सकते और न ही मिल-जुलकर रह सकते हैं। नहीं तो इस क़ुरआन का एकता और आपसी मेल-जोल बढ़ाने से हटकर और कोई रोल ही नहीं है।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/145

इतिहास से मिलने वाली सीख

हम यह बात कह चुके हैं कि एकता और आपसी मेल-जोल में ही सब की भलाई है और लड़ाई-झगड़ों का नुक़सान किसी एक वक़्त, किसी एक जगह और किसी एक आदमी से जुड़ा हुआ नहीं होता है बल्कि यह हमेशा, हर जगह और हर एक के लिए होता है। आपसी एकता अल्लाह का एक ऐसा क़ानून है जिस पर चलकर लोगों को इज़्ज़त व कामयाबी मिलती है। इसके उलट आपसी टूट-फूट और झगड़ों से उन्हें नाकामी और नीचता से हटकर कुछ भी नहीं मिलता है। अल्लाह का बनाया यह "क़ानून" न जाने कितनी बार पिछली क़ौमों और पिछले समाजों ने ख़ुद अपनी आँखो से देखा है जिसका सबसे बड़ा नमूना बनी इस्राईल क़ौम है जो एक पीरियड में बड़ी बुरी ज़िन्दगी जी रही थी मगर जब वह क़ौम एकजुट हो गई और एकता के रास्ते पर चल पड़ी तो अपने आप सारी दुनिया की सरदारी उसके हाथ लग गई लेकिन यही क़ौम जब दोबारा आपस में लड़ने लगी तो इसे

फिर से वही पहले वाली ग़ुलामी और नाकामी का सामना करना पड़ा।

हज़रत अली[अ०] नहजुल बलाग़ा में बहुत खुलकर इस बारे में बात की है और बनी इस्राईल के दोनों हालात का आपस में मुक़ाबला करते हुए उनकी कामयाबी और नाकामी की वजहें बताई हैं मगर हम यहाँ हज़रत अली[अ०] का पूरा ख़ुतबा न लिखकर हल्का सा एक इशारा करके आगे बढ़ जाएंगेः

> तुम्हें उन अज़ाबों से डरना चाहिए जो तुम से पहली क़ौमों पर उनके बुरे कामों और गुनाहों की वजह से आए थे। साथ ही अपने अच्छे और बुरे दोनों हालात में उनके हालात और उनके साथ घटने वाली बातों को हर पल ध्यान में रखो। इस चीज़ से हर पल डरते रहो कि कहीं तुम भी उन्हीं के जैसे न बन जाओ। अगर तुम ने उनकी दोनों (अच्छी-बुरी) हालतों पर ग़ौर कर लिया है तो फिर हर उस चीज़ की पाबन्दी करो जिसकी वजह से इज़्ज़त व कामयाबी ने हर हाल में उनका साथ दिया था और दुश्मन उन से दूर ही दूर रहता था जिसके बाद हर तरह के आराम व सुकून ने उन्हें घेर लिया था, नेमतें अपना सिर झुकाकर उनके साथ हो ली थीं और इज़्ज़त व कामयाबी ने अपने बन्धन उन से जोड़ लिये। ऐसा बस इसलिए हो पाया था क्योंकि वह लोग आपसी मन-मिटाव व झगड़ों से दूर हो गए थे और आपसी

एकता के रास्ते पर डट गए थे, इसी रास्ते पर एक-दूसरे को उभारते थे और इसी रास्ते की एक-दूसरे को नसीहत करते थे। तुम लोगों को भी चाहिए कि हर उस चीज़ से बचकर रहो जिसने उनकी रीढ़ की हड्डी को तोड़ डाला था और उनकी ताक़त को उनकी कमज़ोरी में बदल दिया था। इसकी वजह बस यह थी कि उन्होंने दिलों में एक-दूसरे से जलन और सीनों में एक-दूसरे से दुश्मनी भर ली थी, एक-दूसरे की मदद से पीठ फिरा ली थी और आपसी मदद से हाथ उठा लिया था। तुम लोगों को चाहिए कि पिछले वाले लोगों के ईमान पर गहराई के साथ ध्यान दो और देखो कि मुसीबतों में उनकी क्या हालत थी? क्या वह लोग सारी दुनिया से बढ़कर मुसीबतों में घिरे हुए नहीं थे? क्या उन्हें दुनिया के फ़िरऔनों ने अपना ग़ुलाम नहीं बना रखा था और उनके ऊपर हर तरह के दुखों के पहाड़ नहीं तोड़ रखे थे जिससे उनकी यह हालत हो गई थी कि वह घुट-घुटकर जीने पर मजबूर हो गए थे। न उन्हें अपने बचाव की कोई तरकीब दिखाई पड़ रही थी और न रोकथाम का कोई रास्ता सूझता था। यहाँ तक कि जब अल्लाह ने यह देखा कि यह मेरी मोहब्बत में मुसीबतों पर मुसीबतें झेलते जा रहे हैं और मेरे नाम पर दुखों का सामना कर रहे हैं तो उनके लिए मुसीबत व दुखों की तंगी से आराम के रास्ते निकाले और उनकी

ग़ुलामी को इज़्ज़त और उनके डर को अमन से बदल दिया। जिसके बाद उन्हें हुकूमत भी मिली और ताक़त भी। उन्हें अपनी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर अल्लाह की तरफ़ से इज़्ज़त व कामयाबी मिली। ध्यान दो! जब उनका समाज एकजुट, सोचें एक, दिल एक-दूसरे से मिले हुए, हाथ एक-दूसरे को सहारा देने वाले, तलवारें एक-दूसरे की मदद करने वाली, उनकी समझ तेज़ और उनके इरादे अटूट थे तो उस वक़्त उनकी हालत क्या थी? क्या वह सारी दुनिया पर हुकूमत नहीं कर रहे थे? अब सिक्के का यह रुख़ भी देखो कि जब उनमें फूट पड़ गई, एकता टूट-फूट गई, उनकी बातों, दिलों में दराड़ आ गई और वह टोलियों में बंट गये और अलग-अलग जत्थे बनाकर एक-दूसरे से लड़ने-भिड़ने लगे तो फिर से उनकी हालत यह हो गई थी कि अल्लाह ने उन से इज़्ज़त व हुकूमत छीन ली थी और नेमतें वापस ले ली थीं। अब तुम्हारे बीच उनकी बातें सीखने और सीखकर सही रास्ता चुनने का ज़रिया बन गई हैं।[1]

इसी तरह अगर मुसलमानों ने भी अपनी आँखें बंद रखीं, एकता का यह अनमोल मोती खो बैठे और इस्लामी झंडे तले एक-दूसरे के पास नहीं आए तो उनका भी वही हाल होगा जो पिछले वाले लोगों का हुआ था।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190

हज़रत अली[अ०] एक ख़ुतबे में लोगों को आपसी झगड़ों से बचने का हुक्म देते हुए उन से कहते हैं कि हमेशा दीन का रास्ता दिखाने वालों और उलमा की बताई बातों पर चलो, उनकी नसीहतों को अपनी पूँजि समझो और उनकी जगाने वाली बातों का साथ देने वाले बन जाओ।

इसी तरह रहनुमाओं (लीडर्स) से अमीरूल मोमिनीन इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया हैः

> आम लोगों के मुक़ाबले में तुम लोगों को ज़्यादा बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना होगा, नहीं तो दुश्मन हमारे ऊपर अपना कंट्रोल बना लेगा और सही रास्ते पर चलने वाले कम हो जाएंगे।

नहजुल बलाग़ा के ख़ुतबा/106 में हज़रत अली[अ०] ने यही बात इस तरह से कही हैः

> यह (ग़लत) तरीक़े तुम्हें कहाँ लिये जा रहे हैं, यह अंधेरे तुम्हें किन मुसीबतों में डाले दे रहे हैं और यह झूठी उम्मीदें तुम्हें किस चीज़ का धोखा दे रही हैं। कहाँ से लाए जाते हो और किधर पलटाए जाते हो... हर ग़ायब को पलट कर आना है। अपने आलिमे रब्बानी[1] से सुनो, अपने दिलों को उसकी तरफ़ मोड़ लो और अगर वह तुम्हें पुकारे तो जाग उठो। क़ौम के लीडर को तो अपनी क़ौम से सच बोलना ही चाहिए, अपनी उलझनों को समेटकर रास्ते पर

---

[1] अल्लाह के बताए रास्ते पर चलने वाला सच्चा आलिम

> नज़रें गाड़ देना चाहिएं और अपने दिमाग़ को खोले रखना चाहिए। बहरहाल उसने हक़ीक़त[1] को इस तरह खोल दिया है जिस तरह (धागे में पिरोये जाने वाले) मोहरे को चीर दिया जाता है और इस तरह उसे जड़ से छील डाला है जैसे पेड़ से गोंद। इसके बाद भी बातिल[2] फिर से अपनी जगह पर वापस आ गया है और जिहालत[3] अपनी सवारियों पर चढ़ बैठी है, इसकी घन-गरज बढ़ गई है, हक़[4] की आवाज़ दब गई है, ज़माने ने फाड़ खाने वाले भेड़िए की तरह हमला बोल दिया है, बातिल का ऊँट चुप रहने के बाद फिर बिलबिलाने लगा है, लोगों ने बुराईयों व गुनाहों पर आपस में एका कर लिया है, दीन के मामले में उनके बीच फूट पड़ी हुई है, झूठ पर तो एक-दूसरे से याराना गाँठ रखा है और सच्चाई के मामले में आपस में एक-दूसरे से दूर हो गए हैं।[5]

इमाम अली[अ०] दुश्मनों की चालों से बचने पर ज़ोर देते हुए फ़रमाते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि यह लोग इस तरह की चालों में ही फंसकर रह जाएं। क्या यह एक सच्चाई नहीं है कि दुश्मन की हर चाल आदमी के दिल से फूटने वाली चाहतों के

---

[1] असलियत या वास्तिविकता
[2] ग़लत रास्ता
[3] अज्ञानता
[4] सही रास्ता
[5] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/106

पीछे भागने और बिदअतों[1] में फंस जाने से ही शुरू होती है। इन्हीं बिदअतों और दिली चाहतों को अपना सब कुछ बनाकर कुछ लोग दूसरों के बारे में ग़लत-सलत बातें करने लगते हैं जिसकी वजह से आपस में ही दूरियाँ जन्म ले लेती हैं। अगर सही रास्ते और ग़लत रास्ते वाले दोनों अपनी-अपनी दलीलों व सुबूतों के साथ लोगों के सामने आएं तो सब कुछ अपने आप दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। जब सही और ग़लत को एक-दूसरे में मिला दिया जाता है तभी लोगों के दिलों में शक व सवाल जन्म लेने लगते हैं:

> फ़ितने (दुश्मन की चालें) या तो दिलों से उभरने वाली उन चाहतों से शुरू होते हैं जिनके पीछे लोग दौड़ पड़ते हैं या फिर नए-नए कामों से होती है जो सीधे क़ुरआन से टकराने वाले होते हैं।[2]

हज़रत अली[अ०] इतिहास में बीत चुकी बातों और उनसे मिलने वाली सीख को अपने पीरियड से मिलाते हुए दिखते हैं और अपने समाज की हालत पर बात करते हुए फ़रमाते हैं कि अपने किए हुए वादों को तोड़ने वालों ने बसरा शहर को अपनी चालों का सेंटर और अमीरे शाम मुआविया के प्रोपेगण्डे को अपनी पॉलिसी बना लिया था।

> वह सब बसरा शहर के रहने वालों पर चढ़ दौड़े थे जबकि बसरा वाले सबके सब मेरा

---

[1] ऐसे नए-नए काम जो इस्लाम में न बताए गए हों मगर इसके बाद भी शुरू कर दिए जाएं।

[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/50

> हुक्म मानने वाले और मेरी बैअत पर टिके रहने वाले थे। यह सब करके उन्होंने उनमें फूट डलवा दी और उनकी आपसी एकता को चीर-फाड़ डाला।[1]

हज़रत अली[अ०] की यह बात साफ़-साफ़ इस बात की तरफ़ इशारा कर रही है कि आपसी झगड़ों का सबसे पहला नुक़सान तो यह होता है कि आपस में दूरियाँ जन्म ले लेती हैं। दूसरा नुक़सान यह होता है कि समाज, सिस्टम और लीडरशिप यानी सब कुछ कमज़ोर हो जाता है। अगर इस मुसीबत का डटकर मुक़ाबला करना एक बहुत ज़रूरी काम है तो वहीं आपस में एकता और मेल-जोल बनाए रखना इस से भी बड़ा काम है ताकि दुश्मनों को उनके नापाक मिशन में कामयाबी न मिल सके।

इमाम अली[अ०] इस बारे में अपने दिल का दर्द यूँ सुनाते हैंः

> ऐ लोगो! अगर तुम हक़ (सही रास्ते) की मदद से न भागते और बातिल (ग़लत रास्ते) को कमज़ोर करने में पीछे न हटते तो जो तुम्हारे बराबर था ही नहीं वह कभी भी तुम्हारे ऊपर दाँत न रखता और जिसने तुम पर कंट्रोल पा लिया वह कभी भी तुम पर कंट्रोल न पाता लेकिन तुम तो बनी इस्राईल की तरह बीच रास्ते में ही भटक गये। अपनी जान की क़सम! मेरे बाद तुम्हारी यह मुसीबतें कई गुना बढ़ जाएंगी

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/215

> क्योंकि तुम ने हक़ को पीठ पीछे डाल दिया है और अपने आसपास वालों से रिश्ते-नाते तोड़कर दूर वालों से रिश्ता जोड़ लिया है।[1]

सच्ची बात यही है कि आपसी एकता से बढ़कर कोई भी चीज़ मुसलमानों के बीच उनकी वह पिछली वाली इज़्ज़त व बुलंदी वापस नहीं ला सकती है।

अल्लामा इक़बाल ने बिल्कुल ठीक कहा है:

> मुसलमान अपने दीन की वजह से ज़िन्दा हैं। इस क़ौम के बचे रहने का राज़ बस एक ही है और वह है क़ुरआन से जुड़े रहना।
>
> हम सब मिट्टी हैं और पहचानने वाला दिल तो बस उसी के पास है। इसलिए उसी से जुड़े रहना चाहिए क्योंकि ख़ुदा की रस्सी वही है। मोती की तरह उसके धागे से बंध जाओ, नहीं तो धूल बनकर हवा में बिखर जाओगे।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/164

हज़रत अली[अ0] का दिल ख़ून होता है

जो लोग अपनी कट्टरपंथी सोच की वजह से ग्रुप-बाज़ियों और धड़े बनाने में लगे रहते हों उनसे न तो कोई जंग जीती जा सकती है और न ही उनके हाथों समाजी मामलों का हल निकाला जा सकता है। ऐसे लोग समाज के किसी भी काम नहीं आ सकते बल्कि यह सब पूरी तरह से समाज के घाटे में होते हैं।

अल्लाह के रसूल[स0] के इस दुनिया से जाने के बाद मुस्लिम एकता को बचाए रखने और आपसी दूरियों को मिटाने के लिए इमाम अली[अ0] को सब्र[1] का बड़ा कड़वा घूँट पीना पड़ा था। अपनी हुकूमत में आपको हुकूमत हथियाने के लालचियों के हाथों बड़ी ख़तरनाक चालों व साज़िशों का सामना करना पड़ा था। यही वह लोग थे जिन्होंने हज़रत अली[अ0] की हुकूमत के मुक़ाबले में अपना झण्डा अलग से गाड़ लिया था। यह सारे लोग हज़रत अली[अ0] के लिए एक बहुत बड़ी मुसीबत बने हुए थे। इस्लामी

---

[1] धीरज

इतिहास की तीन बड़ी जंगें (जंगे जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान) इसी साज़िश की आग को दबाने के लिए हज़रत अली[अ०] को लड़ना पड़ी थीं। इमाम अली[अ०] के सारे दुखों में से एक दुख यह भी था कि इन धोखाधड़ी करने वालों और चालबाज़ों से लड़ाई में आम लोगों ने इमाम का साथ नहीं दिया था। लोगों ने तरह-तरह के बहानों से अपनी पीठ मोड़ ली थी। उन लोगों की यह सुस्ती, काहिली, आपसी दुश्मनी, दुनिया की मोहब्बत और एक-दूसरे को दबाने के लिए तरह-तरह की चालें इस्लाम के दुश्मनों के हाथों में एक बड़ा मज़बूत हथियार बन गई थीं। हज़रत अली[अ०] का दिल ख़ून हो रहा था और आप इन गिरगिट की तरह रंग बदलने वालों और तरह-तरह के भेस में सामने आने वालों से बुरी तरह से थक चुके थे। हज़रत अली[अ०] की यह हालत उनके ख़ुतबों और उनकी हदीसों में बड़ी साफ़ झलकती है।

अल्लाह से दुआ करते हुए एक जगह हज़रत अली[अ०] छुपी हुई दुश्मनियों के खुलकर सामने आ जाने और दुश्मनों के दिलों में बैठी हुई जलन के फूट पड़ने से पर्दा भी उठाते हैं। इतना ही नहीं बल्कि अल्लाह के नबी हज़रत मोहम्मद[स०] के इस दुनिया से चले जाने और दुश्मनियों के बढ़ जाने की शिकायत करते हुए मुसलमान समाज की कामयाबी की दुआ भी करते हैं:

> ऐ अल्लाह! हम तुझ से अपने नबी के इस दुनिया से चले जाने, अपने दुश्मनों के बढ़

> जाने और अपनी दिली चाहतों में फंस जाने का शिकवा[1] करते हैं।[2]

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ०] इन फ़िरक़ों और धड़ों के रास्ते से भटक जाने दीनी मामलों में उनके बीच मतभेदों के बारे में बात करते हुए फ़रमाते हैंः

> मुझे ताज्जुब होता है और फिर ताज्जुब क्यों न हो इन फ़िरक़ों की ग़ल्तियों पर जिन्होंने अपने दीन की निशानियों पर मतभेद बना रखे हैं। यह लोग न अल्लाह के नबी के बताए रास्ते पर चलते हैं और न ही उसके जानशीन[3] का हुक्म मानते हैं और न ही ग़ैब[4] पर ईमान लाते हैं। न ही बुराईयों से दूर होते हैं। ग़लत-सलत चीज़ों के पीछे भाग पड़ते हैं और अपनी दिली चाहतों के ग़ुलाम बने हुए हैं। जिस चीज़ को यह लोग अच्छा समझें इनके हिसाब से बस वही अच्छी है और जिस बात को यह बुरा जानें बस वही बुरी है। इन लोगों ने कठिन गुत्थियों को सुलझाने के लिए पूरी तरह से अपने ऊपर भरोसा करने के साथ-साथ ग़लत चीज़ों में अपनी राय बना ली है। जैसे इनमें से हर आदमी ख़ुद ही

---

[1] शिकायत

[2] नहजुल बलाग़ा, लैटर/15

[3] उत्तराधिकारी

[4] क़यामत

> अपना इमाम है और उसने जो अपनी राय से तय कर लिया है बस वही सही है।[1]

हज़रत अली[अ०] दोस्तों के एक-दूसरे से दूर हो जाने की बुराई इस तरह करते हैं:

> तुम उन ऊँटों की तरह हो जिनके चरवाहे कहीं खो गये हों। अगर उन्हें एक तरफ़ से हंकाया जाए तो दूसरी तरफ़ से तितर-बितर हो जाते हैं। अल्लाह की क़सम! तुम जंग की आग भड़काने में बहुत बुरे साबित हुए हो। तुम्हारे ख़िलाफ़ तरह-तरह की चालें चली जाती हैं मगर तुम दुश्मनों के ख़िलाफ़ कोई तरकीब नहीं सोचते। तुम्हारे (शहरों की) सीमाएं कम होती जा रही हैं मगर तुम्हारे ऊपर इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वह तुम्हारी तरफ़ से कभी अपनी आँखें बंद नहीं करते और तुम हो कि आँखें मूँदे पड़े हो। अल्लाह की क़सम! एक-दूसरे पर टालने वाले लोग हारा ही करते हैं।[2]

हज़रत अली[अ०] एक दूसरे ख़ुतबे में इस तरह फ़रमाते हैं:

> तुम लोग अपनी आँखों से देख रहे हो कि अल्लाह से किए हुए वादे तोड़े जा रहे हैं मगर इन सारी बातों पर तुम लोगों का ख़ून ही नहीं खौलता है। जबकि अपने बाप-दादा की रस्मों के तोड़े जाने से तुम्हारी

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/86

[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/34

> जवानी जोश मारने लगती है। तुम यह भी जानते हो कि अब तक अल्लाह के मामले तुम्हारे ही सामने रखे जाते रहे हैं और तुम्हारे ही हाथों उनका हल निकलता आया है। यह मामले तुम्हारी ही तरफ़ फिर कर आते हैं लेकिन तुम ने अपनी जगह ज़ालिमों को दे दी है और अपनी बागडोर उन्हें थमा दी है। यहाँ तक कि अल्लाह के मामले भी उन्हीं को सौंप दिये हैं।[1]

अगर कोई क़ौम या समाज अपने लीडर की बात मानने में एक हो जाए तो बड़े-बड़े कारनामे उभरकर सामने आते हैं और अगर लोग ख़ुद अपने आप में ही मगन हो जाएं, आपस में लड़ाई-भिड़ाई करें और एक-दूसरे से जलने लगें, साथ ही अपने लीडर की बात मानने में एक भी न हों तो अगर इमाम अली[अ०] जैसा लीडर व इमाम भी हो तो वह भी मुआविया जैसे आदमी के सामने कुछ नहीं कर सकता क्योंकि जब साथ देने वाले ही नहीं होंगे तो लीडर अकेला क्या कर लेगा। दुख की बात यह है कि हज़रत अली[अ०] इसी तरह के हालात में घिरे हुए थे। तभी तो फ़रमाया थाः

> मैं ऐसे लोगों को अच्छी तरह से जानता हूँ जिन्हें हुक्म देता हूँ तो वह मानते नहीं। बुलाता हूँ तो आवाज़ पर आते नहीं। बुरा हो तुम्हारा! अब अपने अल्लाह की मदद करने में तुम्हें किस चीज़ का इन्तेज़ार है। क्या दीन तुम्हें एक जगह इकट्ठा नहीं

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/104

> करता और मर्दानगी तुम्हें जोश में नहीं लाती? मैं तुम में खड़ा होकर चिल्लाता हूँ और मदद के लिए पुकारता हूँ लेकिन न तुम मेरी कोई बात सुनते हो, न मेरा कोई हुक्म मानते हो। यहाँ तक कि मेरे हुक्म को न मानने से मिलने वाले नतीजे खुलकर सामने भी आ रहे हैं। न तुम पर भरोसा करके ख़ून का बदला लिया जा सकता है, न किसी जगह तक पहुँचा जा सकता है। मैंन तुम को तुम्हारे ही भाईयों की मदद के लिए पुकारा था मगर तुम उस ऊँट की तरह बिलबिलाने लगे जिसकी नाभी में दर्द हो रहा हो और उस कमज़ोर ऊँट की तरह ढीले पड़ गये हो जिसकी कमर ज़ख़्मी[1] हो। फिर मेरे पास तुम लोगों की एक छोटी सी और ढीली-ढाली सी फ़ौज आई और वह भी इस तरह कि जैसे उसे उसकी नज़रों के सामने मौत की तरफ़ ढकेला जा रहा हो।[2]

इमाम का हुक्म मानने में यह सुस्ती और यह लापरवाई इस बात की वजह बन गई थी कि हज़रत अली[अ०] अपने चाहने वालों को शाम की फ़ौज वालों से मिलाने लगे थे और अमीरे शाम मुआविया के इन साथियों की मिसाल अपने चाहने वालों को सुनाने लगे थे क्योंकि अमीरे शाम की फ़ौज का एक-एक सिपाही अपने लीडर के हुक्म

[1] चोटिल

[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/39

को पूरे ध्यान से सुनता था और उसे पूरा करता था। इसीलिए इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया थाः

> ऐ लोगो! तुम्हारे बदन तो एक हैं मगर अक़लें और ख़्वाहिशें (चाहतें) अलग-अलग हैं। तुम पर हुकूमत करने वाले तुम्हारे हाथों मुसीबतें झेल रहे हैं। तुम्हारे ऊपर हुकूमत करने वाला अल्लाह के रास्ते पर चल रहा है मगर तुम उसके हर हुक्म को तोड़ रहे हो। इसके उलट शाम वालों पर हुकूमत करने वाला अल्लाह के हर हुक्म को अपने पैरों तले कुचल रहा है मगर वह लोग उसकी हर बात मान रहे हैं। अल्लाह की क़सम! मैं यह चाहता हूँ कि मुआविया तुम लोगों में से दस आदमी मुझ से ले ले और बदले में अपना एक आदमी मुझे दे दे, जिस तरह दीनार से दिरहम बदले हैं।[1]

अपने लीडर और इमाम की बात न मानने की वजह से हज़रत अली[अ०] के दिल में उठने वाले दर्द की यह बड़ी भयानक शक्ल है। इमाम अली[अ०] के इस दर्द की कोई सीमा नहीं है। इमाम ने अपने एक ख़ुतबे में क़सम खाई है और यह फ़रमाया हैः

> क़सम है उस मालिक की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! यह लोग तुम सब को ज़रूर अपने कंट्रोल में कर लेंगे और ऐसा इसलिए नहीं होगा कि उनका हक़ (अधिकार) तुम से ज़्यादा है बल्कि ऐसा सिर्फ़ इसलिए होगा

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/95

क्योंकि वह अपने लीडर के बातिल (ग़लत) को भी फ़ौरन मान लेते हैं और तुम मेरे साथ में हमेशा सुस्ती से काम लेते हो।

फिर फ़रमाते हैंः

होता तो यह है कि लोग अपने ऊपर हुकूमत करने वालों के ज़ुल्म[1] से डरा करते हैं मगर मेरे साथ उल्टा हो रहा है कि मैं ख़ुद अपनी प्रजा के ज़ुल्म से ही डर रहा हूँ। मैंने तुम्हें जिहाद के लिए उभारा लेकिन तुम अपने घरों से नहीं निकले। मैंने तुम्हें तुम्हारी भलाई की बातें सुनाना चाहीं मगर तुम ने एक न सुनी। मैंने चुपके से भी और चीख़-चिल्लाकर भी तुम्हें जिहाद के लिए पुकारा और ललकारा लेकिन तुम ने मेरी एक न मानी। तुम्हें ख़ूब समझाया-बुझाया मगर तुम ने मेरी बातें सुनी ही नहीं। क्या तुम लोग होते हुए भी ग़ायब रहते हो?[2]

हज़रत अली[अ०] अपने एक ख़ुतबे में किनारे हो जाने वालों के बारे में फ़रमाते हैं कि यह लोग ज़ालिमों से मुक़ाबला करने के लिए मेरी बात सुनना ही नहीं चाहते हैं।

हालात इतने बुरे थे कि अभी अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] की बात पूरी भी नहीं होती थी कि सामने बैठे हुए लोगों में से हर एक अपनी-अपनी राय देने लगता था जैसे किसी ने कुछ सुना ही न

---

[1] अत्याचार

[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/95

हो और इस बात का हज़रत अली[अ०] को बड़ा दुख था।

क्या यह सारी बातें हज़रत अली[अ०] के अकेलेपन और उनके ऊपर टूटने वाली मुसीबतों की तरफ़ इशारा नहीं करती हैं?

आइए! अब अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] के दिल से उठने वाली टीसों का एहसास करने की कोशिश करते हैं:

> ख़ुदा की क़सम! कितनी अजीब सी बात है कि वह लोग तो बातिल (ग़लत रास्ते) पर भी एका किए हुए हैं और तुम सब हक़ (सही रास्ते) पर होते हुए भी भटके जा रहे हो। क्या यह बात आदमी के दिल को मुर्दा बना देने और उसके दुखों को बढ़ा देने के लिए काफ़ी नहीं है? बुरा हो तुम्हारा! तुम यूँ ही मुसीबतों में घिरे रहो! तुम तो ख़ुद ही आने वाले तीरों का निशाना बने हुए हो। तुम्हें बर्बाद किया जा रहा है मगर तुम जवाबी हमले के लिए हिलते भी नहीं हो। वह तुम से लड़-भिड़ रहे हैं और तुम जंग से जी चुराते हो। अल्लाह के हुक्म से मुँह मोड़ा जा रहा है और तुम इन सारी बातों पर राज़ी हो। अगर मैं गर्मियों में तुम्हें उनकी तरफ़ बढ़ने के लिए कहता हूँ तो तुम कहते हो कि बड़ी भयानक गर्मी पड़ रही है, इतनी छूट दे दीजिए कि गर्मी का ज़ोर टूट जाए। अगर ठंड के मौसम में चलने के लिए कहता हूँ तो तुम कहते हो कि कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा है, इतना

> ठहर जाईये कि सर्दी का मौसम बीत जाए। यह सब सर्दी और गर्मी से बचने की बातें हैं। जब तुम सर्दी और गर्मी से इस तरह भागते हो तो फिर अल्लाह की क़सम! तुम तलवारों को देखकर इस से कहीं ज़्यादा भागोगे।[1]

यह अल्लाह का क़ानून है और अल्लाह अपने इस क़ानून को कभी नहीं तोड़ता कि कामयाबी बस उसी ग्रुप को मिलती है जिसमें एकता पाई जाती है और इधर-उधर बिखरे हुए ग्रुप को नाकामी और हार ही मिलती है।

हज़रत अली[अ०] ताज्जुब करते हुए फ़रमाते हैं:

> क्या यह अजीब सी बात नहीं है कि बिना किसी मदद या वादे के मुआविया के बुलाने पर तुम सब के सब दौड़े चले जाते हो जबकि मैं तुम्हारी मदद करने के साथ-साथ तुम्हें मिलने वाले तोहफ़ों का वादा करके तुम्हें बुलाता हूँ मगर इसके बाद भी तुम मुझ से दूर भागते हो और मेरी बात नहीं सुनते।[2]

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ०] अल्लाह के इसी क़ानून की तरफ़ इशारा करते हुए यमन पर बुस्र बिन अरतात के हमले की बात करते हुए फ़रमाते हैं कि यह सब हो गया और तुम लोगों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। इमाम फ़रमाते हैं:

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/27
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/178

> अल्लाह की क़सम! मैं तो अब इन लोगों के बारे में यह सोचने लगा हूँ कि यह लोग जल्दी ही हुकूमत व दौलत तुम से हथिया लेंगे क्योंकि वह बातिल (ग़लत रास्ते) होते हुए भी एक हैं और तुम्हारे अंदर हक़ (सही रास्ते) पर होते हुए भी एका नहीं है। तुम सही बातों में अपने इमाम का हुक्म न मानने वाले और वह ग़लत बातों में भी अपने इमाम के पीछे-पीछे चलने वाले हैं।[1]

इमाम अली[अ०] इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यह लोग अपनी बुराईयों और अपने दिल के कठोर हो जाने की वजह से एकता से दूर होकर तितर-बितर हो रहे हैंः

> तुम अल्लाह के दीन में एक-दूसरे के भाई हो लेकिन तुम्हारी बुरी नियतों और आपसी दुश्मनियों ने तुम्हें एक-दूसरे से अलग-अलग कर दिया है। न तुम एक-दूसरे का बोझ बंटाते हो और न आपस में एक-दूसरे को समझाते-बुझाते हो, न एक-दूसरे पर कुछ ख़र्च करते हो और न तुम्हें एक-दूसरे की चाहत है।[2]

नहजुल बलाग़ा में ऐसी-ऐसी दुख भरी कहानियाँ भरी पड़ी हैं जिन से पता चलता है कि हज़रत अली[अ०] अपने चाहने वालों के बीच आपसी दूरियों और लड़ाई-झगड़ों से कितने दुखी थे। यूँ तो हमारी इस किताब का यह चेप्टर थोड़ा लम्बा हो

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/25
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/111

गया है लेकिन चलते-चलते हज़रत अली[अ०] की यह आख़िरी बात भी सुन लीजिए। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> मैंने तुम लोगों को दुश्मन से जंग करने के लिए रात में भी और दिन में भी, खुल्लम-खुल्ला भी और अकेले में भी पुकारा और ललकारा और तुम से यह भी कहा कि इससे पहले कि वह जंग के लिए बढ़ें तुम उन पर धावा बोल दो। अल्लाह की क़सम! जिन लोगों पर उनके घरों के अन्दर ही हमला हो जाता है वह बड़ी बुरी तरह से पछाड़े जाते हैं लेकिन तुम ने जिहाद को दूसरों पर टाल दिया है और एक-दूसरे की मदद करने से बचने लगे हो। यहाँ तक कि तुम पर हमले हुए और तुम्हारे शहरों पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लिया गया।[1]

दुश्मनों से मुक़ाबला करने के लिए आपसी एकता से बढ़कर दूसरा कौन सा हथियार कारगर हो सकता है? दुश्मनों और बुरी नियतें रखने वालों के प्रोपेगण्डे और उनकी चालों को नाकाम बनाने के लिए समाजी एकता से बड़ा भला दूसरा कौन सा बाँध काम आ सकता है?

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/27

लीडर और एकता

‘‘एकता’’ जैसा मज़बूत हथियार और एकता को बनाए रखने की इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी को पूरा करना समाज और हुकूमत को बचाए रखने में बहुत बड़ी मदद करता है। हुकूमत चलाने वालों का समाज के ख़ास लोगों के साथ बर्ताव, आम इन्सानों को भी इज़्ज़त देना और समाज को अच्छी सर्विस देना, समाज, हुकूमत और किसी भी शहर के लोगों में एकता व हमदर्दी पैदा करने में बहुत बड़ा रोल निभाता है।

अब हम यहाँ अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] की ज़बान से निकली हुई कुछ बातें आपके सामने पेश करेंगे जो हुकूमत चलाने वालों के लिए बड़ी काम की होंगीः

(1) हुकूमत और समाज के अधिकारों का ध्यान रखना

वह लोग जिनके हाथ में दूसरों के अधिकार और उन अधिकारों को पूरा करने की ड्युटी होती है अगर वह इन अधिकारों को अच्छी तरह से

जानते व समझते हों और उन्हें पूरा करें तो अपने आप समाज में एकता व मोहब्बत उभर जाएगी।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> सबसे बड़ा हक़ (अधिकार) जिसे अल्लाह ने वाजिब किया है वह यह है कि हुकूमत करने वालों की तरफ़ से उनकी प्रजा को मिलने वाला अधिकार है। यह एक ऐसी ड्युटी है जिसे अल्लाह ने हुकूमत करने वालों में से हर एक पर वाजिब कर दिया है। हुकूमत करने वालों का एक बड़ा काम और ड्युटी मोहब्बत व हमदर्दी उभारना भी होता है और यह काम ऐसा है जिससे उनके दीन का झंडा भी ऊँचा हो जाता है।[1]

(2) समाजी इंसाफ़

हुकूमत करने वालों से लोगों की उम्मीदें और हमदर्दी उस वक़्त और बढ़ जाती है जब वह समाज के एक-एक आदमी तक इंसाफ़ पहुँचाने में भरोसा रखते हों। अगर ऐसा हो तो फिर लोग हुकूमत का साथ देने और हुकूमत करने वालों से मोहब्बत करने के साथ-साथ उनकी कमियों को भी आसानी से झेल लेते हैं।

इस बारे में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> हुकूमत करने वालों के लिए सबसे बड़ी आँखों की ठंडक इसमें है कि शहरों में इंसाफ़ का झंडा लहराता रहे ताकि प्रजा की

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/216

मोहब्बत उजागर होती रहे। प्रजा की मोहब्बत उसी वक़्त सामने आती है जब उनके दिलों में किसी तरह का मैल न हो और उनकी हमदर्दी उसी वक़्त साबित होती है जब वह हुकूमत करने वालों को बचाने के लिए उनके आसपास घेरा डाले रहें। उनकी हुकूमत को अपने सर पर आन पड़ा कोई बोझ न समझें और न उनकी हुकूमत की आख़िरी घड़ियाँ गिनने के लिए बेचैन रहें। इसलिए उनकी उम्मीदों को बाक़ी रखना, उन्हें इज़्ज़त देते रहना और उनमें से अच्छा काम करने वालों के कारनामों को दूसरों के बीच सुनाते भी रहना क्योंकि उनके अच्छे कारनामों को दूसरों के सामने दोहराने से दूसरे बहादुर जोश से भर जाते हैं और कमज़ोर हिम्मत वालों को ताक़त मिलती है।[1]

(3) खुले दरवाज़े के साथ हुकूमत करना

जो चीज़ें हुकूमत करने वालों और लोगों के बीच एक रिश्ता बनाने और मोहब्बत पैदा करने में असरदार होती हैं उनमें से एक यह भी है कि लोग अपने ऊपर हुकूमत करने वालों के पास आसानी से पहुँच सकें और हुकूमत करने वालों तक पहुँचने के लिए उन्हें किसी भी तरह की दीवार, दरबार, सेक्रेट्री या मुंशी को फलांग कर न जाना पड़े। वैसे

---

[1] नहजुल बलाग़ा, मकतूब/53

सेक्रेट्री और दूसरी तरह के सरकारी आदमियों का होना हुकूमती सिस्टम को चलाने के लिए ज़रूरी होता है लेकिन इन सब चीज़ों से उनके बीच कोई फ़ासला या दूरी नहीं होना चाहिए कि आदमी इन्हीं लोगों में उलझकर रह जाए और हुकूमत में जिससे मिलना है उससे आम आदमी मिल ही न पाए और अपनी बात ही न कह सके।

हज़रत अली[अ०] अपने एक लैटर में मिस्र के गर्वनर मालिके अश्तर को इस तरह लिखते हैंः

> यह भी ध्यान रहे कि लोगों से ज़्यादा दिनों तक दूर न रहना क्योंकि हुकूमत करने वालों का आम लोगों से छुप कर रहना एक तरह की मुसीबत और मामलों से बेख़बर रहने की वजह बन जाता है। लोगों से छुप–छुपाकर रहने का नुक़सान यह भी होता है कि वह भी हुकूमत के कामों व पालिसियों को नहीं जान पाते जिसकी वजह से कोई भी बड़ी चीज़ उनकी नज़र में छोटी और कोई भी छोटी चीज़ बड़ी बन जाती है या अच्छाई बुराई और बुराई अच्छाई हो जाया करती है जिससे हक़ (सही) बातिल (ग़लत) के साथ मिल जाता है। वैसे भी हुकूमत करने वाला आख़िर एक इंसान ही होता है इसलिए अगर उसे बहुत सी बातें न बताई जाएं तो वह उन बातों से अंजान ही बना रहेगा। हक़ के माथे पर कोई निशान नहीं हुआ करता कि जिसे देखकर

> झूठ से सच को अलग करके पहचान लिया जाए।[1]

हुकूमत करने की यह पालिसी और आम लोगों पर अपने दरवाज़ों को हर पल खुला रखने का फ़ाएदा यह होता है कि लोग हुकूमत को अपनी हुकूमत मानते हैं और आपसी मेल-मोहब्बत और समाजी मेल-मिलाप से हुकूमत को मज़बूत बनाए रखते हैं।

(4) लोगों की इज़्ज़त-आबरू को बचाना

अगर हुकूमत करने वाले अपनी जनता की इज़्ज़त-आबरू को बचाने की कोशिश भी करते रहें तो उन्हें पूरे समाज का सर्पोट बड़ी आसानी से मिल जाता है। इसके उलट अगर एक-दूसरे की इज़्ज़त की दीवार ढह जाए और हुकूमत के बड़े लोग बस आम लोगों की कमियाँ गिनाने में ही लगे रहें तो हुकूमत और आम जनता में दूरी पैदा हो जाती है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> लोगों में कमियाँ और बुराईयाँ तो होती ही हैं। हुकूमत करने वाले का एक बड़ा काम यह भी है कि वह इन चीज़ों पर पर्दा डाले। इसलिए जो बुराईयाँ तुम्हारी नज़रों से ओझल हों उन्हें न उछालना क्योंकि तुम्हारा काम बस उन्हीं बुराईयों को मिटाना है जो तुम्हें पता चल गई हों। जो बुराईयाँ

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53

> ढकी-छुपी हों उनका फ़ैसला अल्लाह के हाथ में है। इसलिए जहाँ तक बन पड़े बुराईयों को छुपाओ ताकि अल्लाह भी तुम्हारी उन बुराईयों को छुपाए जिन्हें तुम अपनी जनता से छुपाए रखना चाहते हो।[1]

हुकूमत करने वालों और आम जनता का एक-दूसरे की बुराईयों को उछालना और एक-दूसरे को नीचा दिखाना उनमें आपसी दुश्मनी उभार देता है और इसी दुश्मनी की वजह से यह समाजी मोहब्बत या मेल-मिलाप ख़त्म हो जाता है जिससे समाज टूट-फूट जाता है।

(5) लोगों के लिए काम करना

समाज में एकता को बाक़ी रखने और दिन बदिन इसे मज़बूत बनाने के लिए हुकूमत करने वालों और समाज के बड़ों को समाज में रहने वाले लोगों से जुड़ी अपनी हर ड्युटी को अच्छी तरह से पूरा करना चाहिए क्योंकि इन लोगों को आम जनता की मोहब्बत व सपोर्ट बस तभी मिल सकता है जब यह लोग जनता की भलाई में लगे हुए होंगे। अगर यह लोग समाज के किसी ख़ास वर्ग या मज़े से जीने वालों की भलाई में लग गए तो सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो जाएगा। इतना ही नहीं बल्कि अगर इससे हटकर कोई और रास्ता चुन लिया गया तो हुकूमत और समाज के बड़ों को आम जनता के ग़ुस्से व नाराज़गी को भी झेलना

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53

पड़ेगा जिससे बहुत सारी कठिनाईयाँ आ जाएंगी जिनमें से एक समाजी एकता का बिखरना भी है।

हज़रत अली[अ०] मिस्र के गर्वनर मालिके अश्तर को इसी सरकारी लैटर में यह भी लिखते हैं:

> तुम्हें हर तरीक़े से ज़्यादा वह तरीक़ा पसन्द होना चाहिए जो हक़ (सही होने) के हिसाब से बेहतरीन, इंसाफ़ के हिसाब से सब को अंदर लेने वाला और ज़्यादा से ज़्यादा आम लोगों की मर्ज़ी वाला हो क्योंकि आम जनता की नाराज़गी समाज के बड़े लोगों की मर्ज़ी या ख़ुशी को बेकार बना देती है। साथ ही समाज के बड़े लोगों की नाराज़गी को आम जनता की ख़ुशी के लिए अंदेखा भी किया जा सकता है।[1]

फिर इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> जनता में ख़ास लोगों से बढ़कर कोई ऐसा नहीं होता जो अच्छे वक़्त में हुकूमत करने वाले पर बोझ बनने वाला, मुसीबत में मदद से कतरा जाने वाला, इंसाफ़ पर नाक-भौं चढ़ाने वाला, मांगने पर हाथ झाड़ कर पीछे हट जाने वाला, मिलने पर कम एहसान मानने वाला, अंदेखा कर दिये जाने पर बड़ी मुश्किल से कोई बहाना सुनने वाला और मुसीबतें आ जाने पर बेसब्री दिखाने वाला हो। इसके उलट दीन का मज़बूत सहारा, मुसलमानों की ताक़त और दुश्मन के

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53

> मुक़ाबले में डट जाने वाले यही आम लोग होते हैं। इसलिए तुम्हारा पूरा ध्यान इन्हीं आम लोगों की तरफ़ होना चाहिए। तुम्हारी जनता में तुम से सबसे ज़्यादा दूर वह आदमी होना चाहिए जो लोगों की बुराईयाँ निकालने में ज़्यादा लगा रहता हो।[1]

इससे पता चलता है कि समाज के बड़ों और हुकूमत करने वालों का सबसे बड़ा काम यह भी है कि वह आम लोगों की ज़रूरतों को पूरी लगन से पूरा करते रहें ताकि उन्हें हर पल जनता का भरपूर सर्पोट मिलता रहे। इस से एकता और आपसी मोहब्बत भी पनपती है और हुकूमत व जनता के बीच दूरी भी नहीं रहती। साथ ही आम लोगों के दिलों में एक-दूसरे के लिए हमदर्दी और नर्मी के साथ मोहब्बत भी उभर आती है।

(6) अच्छी बातों और रस्मों को फैलाना

कभी-कभी समाज में कुछ ऐसी रस्में भी पाई जाती हैं जिनसे आपसी मोहब्बत और समाजी मेल-मिलाप की सीख मिलती है। जब तक इन रस्मों में दीनी हिसाब से कोई मुश्किल या नुक़सान न हो, इन्हें ख़त्म नहीं करना चाहिए ताकि आम लोगों के दिलों को तकलीफ़ न पहुँचे। हज़रत अली[अ०] मालिके अश्तर को इस तरह की रस्मों के बारे में लिखते हैं:

---

[1] नहजुल बालाग़ा, लैटर/53

> देखो! उन अच्छी रस्मों और अच्छी बातों को ख़त्म न करना जिन पर पहले से यह लोग चलते चले आ रहे हैं और जिन बातों से आपसी मेल-जोल बढ़ा है।[1]

(7) वादों को पूरा करना

वादों को पूरा करना और समझौतों पर डटे रहना इतनी ख़ास चीज़ है कि अगर हम ग़ैर-मुस्लिमों से भी किसी चीज़ का वादा या समझौता करें तो एक मुसलमान होने के नाते उसे पूरा करना हमारी ड्यूटी है। हाँ! अगर ख़ुद उनकी तरफ़ से वादा या समझौता तोड़ दिया जाए तो मामला बदल जाता है।

हज़रत अली[अ०] वादों व समझौतों की पाबन्दी करने को बहुत ज़रूरी बताते हुए आपसी मोहब्बत और एकता में इसका असर इस तरह समझाते हैंः

> अल्लाह ने जो ज़िम्मेदारियाँ हमें दी हैं उनमें वादों को पूरा करने से बढ़कर कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी अहमियत (महत्व) को दुनिया अपनी अलग-अलग राय के बाद भी पूरी तरह से मानती हो।[2]

अगर समाज में वादों को पूरा करने और समझौतों की पाबन्दी का कल्चर बन जाए तो समाज में अमन-शांति और भरोसा बन जाता है और यही समाजी एकता का सबसे बड़ा फ़ैक्टर है।

---

[1] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53
[2] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53

अनमोल मोती

समाजी एकता, मेल-मोहब्बत और आपसी झगड़ों से दूरी के बारे में हज़रत अली[अ०] की नसीहतें भरी पड़ी हैं। नीचे हम इसी बारें में कुछ अनमोल मोती ''नहजुल बलाग़ा'' से आपके लिए पेश कर रहे हैंः

(1) अफ़वाहों से दूरी

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

ऐ लोगो! अगर तुम्हें अपने किसी दीनी भाई की दीनदारी और तौर-तरीक़ों के सही होने का पूरा-पूरा भरोसा हो तो फिर उसके बारे में सुनी-सुनाई बातों पर कान न धरो। देखो! कभी-कभी जब तीर चलाने वाला तीर चलाता है तो तीर निशाने से भटक भी जाता है और बात ज़रा में इधर से उधर हो जाती है। जो ग़लत बात होगी वह ख़ुद ही ग़ायब हो जाएगी। अल्लाह हर चीज़ का सुनने वाला और हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है। तुम्हें पता होना चाहिए कि सच

> और झूठ में बस चार उंगलियों की दूरी होती है। जब इमाम अली[अ०] से इसका मतलब पूछा गया तो इमाम ने अपनी उंगलियों को मिलाकर अपने कान और आँख के बीच रखा और कहा कि झूठ वह है जिसके बारे में तुम कहो कि मैंने सुना है और सच वह है जिसके बारे में तुम कहो कि मैंने देखा है।[1]

(2) भेद-भाव से दूरी

कभी-कभी बेकार का भेदभाव लोगों को एक-दूसरे के मुक़ाबले में ला खड़ा कर देता है जिससे पूरे समाज और समाजी एकता को नुक़सान पहुँचता है। इमाम अली[अ०] इस तरह के भेदभाव से रोकते हुए फ़रमाते हैंः

> तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि अपने दिलों में छुपे हुए भेदभाव और जाहिलियत से भड़की हुई आग को बुझा दो क्योंकि एक मुसलमान के अंदर यह बुराई उसके घमंड, लालच, अकड़, शैतानी शक और शैतानी चालों ही का रिज़ल्ट होती है। इज्ज़त व झुक कर मिलने को अपने सिर का ताज बनाने, घमंड को अपने पैरो तले रौंदने और अकड़कर चलने के शौक़ को अपने दिल से निकाल फेंकने को अपने ऊपर ज़रूरी कर लो। अपने दुश्मन शैतान और उसकी फ़ौज

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/139

> को ख़ुद से दूर करने के लिए इंकेसारी (नम्रता) का मोर्चा बना लो।[1]

(3) एकता की रस्सी के टूटने पर ताज्जुब

कभी-कभी आपसी एकता को बनाए रखने के सारे फ़ैक्टर सामने ही होते हैं लेकिन फिर भी लोगों की सोचों और कामों में मतभेद पाया जाता है जो कि बहुत ही ताज्जुब की बात है। हज़रत अली[अ०] इस बात पर बहुत ताज्जुब करते हैं कि किसी इस्लामी कोर्ट में अलग-अलग जज एक ही जैसे मामलों में अलग-अलग फ़ैसले कैसे दे देते हैं? फ़ैसला देने के बाद जब कोई जज उसके पास जाता है जिसने उन्हें जज बनाया है तो वह भी हर एक के फ़ैसले को सही ठहरा देता है। इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं कि जब उनका ख़ुदा एक है, उनका पैग़म्बर एक है और उनकी आसमानी किताब भी एक है तो फिर ऐसा कैसे हो जाता है:

> जब उनमें से किसी एक के सामने कोई मामला फ़ैसले के लिए आता है तो वह जज अपनी राय से उसका हुक्म लगा देता है। फिर बिल्कुल वही मामला किसी दूसरे जज के सामने जाता है तो वह उस पहले वाले जज के हुक्म के उलट फ़ैसला सुना देता है। फिर जब यह सारे के सारे जज अपने उस ख़लीफ़ा के पास इकट्ठा होते हैं जिसने उन्हें जज बना रखा है तो वह सबकी रायों

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190

> को ही सही ठहरा देता है जबकि उनका अल्लाह एक, नबी एक और किताब भी एक है।[1]

(4) जंग के मैदान में एकजुटता

हज़रत अली[अ०] ने मिस्र के गर्वनर मालिके अश्तर को लिखा थाः

> फ़ौजी सरदारों में से वही सरदार तुम्हारे यहाँ बड़ा समझा जाए जो फ़ौजियों की मदद करने में बराबर का भागीदार रहता हो और उन्हें इतना देता हो कि जिस से उनका और उनके पीछे रह जाने वाले बाल-बच्चों का अच्छी तरह से गुज़ारा हो सकता हो ताकि वह सारी चिन्ताएं छोड़कर पूरी लगन के साथ दुश्मन से लड़ सकें क्योंकि फ़ौजी सरदारों के साथ तुम्हारा मेहरबानी से पेश आना उनके दिलों को तुम्हारी तरफ़ मोड़ देगा। हुकूमत करने वालों के लिए सबसे बड़ी आँखों की ठंडक इसमें है कि शहरों में इंसाफ़ बना रहे ताकि हुकूमत करने वालों से जनता की मोहब्बत दिखाई पड़ती रहे।[2]

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/18
[2] नहजुल बलाग़ा, लैटर/53

(5) निफ़ाक़ से दूरी

पुराने ज़माने से ही लोग कहते चले आ रहे हैंः क़ुर्बान जाऊँ उसके जिसका दिल और ज़बान एक है।

यह साफ़-साफ़ बात करना और गिरगिट की तरह रंग न बदलना अल्लाह को भी बड़ा पसन्द है जिसे हम ''इख़्लास'' कहते हैं और लोगों को भी पसन्द है। इसकी वजह से समाज में लोगों का एक-दूसरे पर भरोसा बढ़ जाता है।

हज़रत अली[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैंः

> अपने तौर-तरीक़ों को पलटने और उन्हें अदलने-बदलने से बचो! दो तरह की बातें करने और तरह-तरह के भेस बदलने से भी दूर रहो और अपनी एक ज़बान रखो। आदमी को चाहिए कि वह अपनी ज़बान को अपने कंट्रोल में रखे क्योंकि यह ज़बान अपने ही मालिक पर हमला कर देती है।[1]

(6) शैतानी चालें

हज़रत अली[अ०] अपने पिछले उन साथियों को भी याद करते हैं जो इमाम की हर बात मानते थे, आपस में मिल-जुल कर रहते थे, अल्लाह के बताए दीन पर चलते थे और शैतान से कोसों दूर रहते थे। इमाम उन्हें याद करते हुए उन से मिलने की चाहत करते हैं जो अब इस दुनिया से जा चुके

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/176

थे लेकिन उनकी यादें अभी भी बाक़ी थीं। इसके बाद इमाम अली[अ०] समाज को तोड़ देने वाली शैतानी चालों के बारे में इस तरह से बताते हैंः

> बेशक! तुम्हारे लिए शैतान ने अपने रास्ते आसान कर दिए हैं। वह चाहता है कि तुम्हारे दीन की एक-एक गाँठ को खोल दे और तुम में एकजुटता की जगह फूट डाल दे। इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम उसकी चालों और झाड़फूँक से मुँह मोड़े रहो और नसीहत देने वाले की नसीहत को गाँठ बाँधकर मान लो।[1]

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/121

आख़िरी बात

यह मिसाल तो सबकी सुनी हुई हैः *एक हाथ से ताली नहीं बजती।*

यह एक बिल्कुल सही बात है।

जब एक हाथ दूसरे हाथ से मिलता है तो इस से मोहब्बत, अपनापन और आपसी प्यार जन्म लेता है। जब एक कंधा दूसरे कंधे से मिला होता है तो इस से एकता बनती है और जब एक क़दम दूसरे क़दम के साथ मिलकर आगे बढ़ता है तो इससे रास्ता आसानी से तय होता है।

क्या यह सच नहीं कि बूँदों के मिलने से नहर, नहरों के मिलने से नदी और नदियों के मिलने से समुंद्र बनते हैं? अगर यह सच है तो क्या यह सच्चाई नहीं हो सकती कि आपसी मेल-मिलाप और आपसी प्यार-मोहब्बत के मिलने से एक अच्छा समाज बनता है? जो लोग यह नहीं चाहते कि ''मैं'' और ''तुम'' से बाहर निकल कर ''हम'' के मैदान में क़दम रखें वह सही मायनी में दुश्मनों की शैतानी पॉलीसियों को आगे बढ़ाने में ख़ुद ही उनकी मदद करते हैं। जो चीज़ हमारे बीच पाई

जाने वाली दूरियों को मोहब्बत और एकजुटता में बदल कर हमें एकता की माला में बांध सकती है, वह बस आपसी दुश्मनियों, जलन, घमंड व अकड़ और बेकार के भेदभाव जैसी बुराईयों से ख़ुद को दूर करना है। आज हमें समाजी दूरियों से कहीं बढ़कर आपसी मोहब्बत व एकता की ज़रूरत है।

अपनी समाजी एकता को संभाले रखने के लिए हमें प्यार-मोहब्बत के नशे में झूमकर अपनी अना व अकड़ को मिटाना होगा और साथ ही अपनी एक जैसी बातों में एक साथ आगे बढ़कर आपसी झगड़ों व टूट-फूट को हवा देने वाली बातों से बचना होगा। जब हमारे दुश्मन अपने शैतानी मिशन में कामयाबी पाना चाहते हैं तो हम क्यों अपनी आपसी लड़ाईयों की वजह से उनके मिशन की कामयाबी में उनकी मदद करें? हम ने इतिहास में एकता के फ़ाएदे भी देखे हैं और एकता न होने के नुक़सान भी।

आइये! हम सब मिलकर यह वादा करें कि आज ही हम आपस में प्यार-मोहब्बत और एकता के रास्ते अपने पिछले सारे झगड़ों को अंदेखा करते हुए उस अली[अ०] का हाथ थाम लें जो समाजी एकता के झंडे को उठाने वाला और सारी दुनिया में लहराने वाला था।

जिसकी आवाज़ आज सदियाँ गुज़रने के बाद भी हमारे कानों में गूँज रही हैः

> आपसी झगड़ों और समाजी टूट-फूट से दूर रहना क्योंकि समाज से अलग हो जाने वाला शैतान के पाले में चला जाता है।[1]

और वही अली[अ०] आज भी हमें पुकार रहा हैः

> अल्लाह का हाथ जमाअत (समाज) के साथ होता है।[2]

समाजी एकता और आपसी मेल-मोहब्बत हमारे मौला हज़रत अली[अ०] की ज़िंदगी का वह जगमगाता हुआ तारा है जो आज तक भी अपनी रौशनी बिखेर रहा है। कितना अच्छा होगा अगर हम भी अपने मौला व आक़ा के सिखाए रास्ते पर आगे बढ़ें और कामयाबी की मंज़िलों को तय करें।

*****

---

[1] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/125
[2] नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/125